Date – 18/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Misapprehension : Mimamsa Philosophy

Scanned with CamScanner

विपरीत ख्याति

यह कुमारिल भट्ट का भ्रम विषयक सिद्धान्त है। प्रभाकर के विपरीत के मानते हैं कि भ्रम एक ज्ञान है और वह अन्यथा ज्ञान या मिथ्याज्ञान है। जब हम सीपी को रजत रूप में देखते हैं और कहते हैं कि 'यह रजत है' तो यहाँ उद्देश्य और विधेय दोनों सत् होता है। संसार में दोनों (रजत, सर्प) की सत्ता होती है। भ्रम इस बात को लेकर होता है कि दो सत् किन्तु पृथक वस्तुओं को उद्देश्य और विधेय के रूप में जोड़ देते हैं। इस प्रकार भ्रांति ज्ञान के विषयों को लेकर नहीं बल्कि उसके संसर्ग को लेकर होती है। भ्रम विपरीत ज्ञान है जिसमें प्रस्तुत वस्तु अन्य वस्तु के रूप में दृष्टिगत होती है।

आलोचना

कुमारिल ने भ्रम को पुरुषतन्त्र मानकर सिद्धान्त : कम से कम अपने भ्रम विवेचन में वस्तुवाद का परित्याग कर दिया है।

Scanned with CamScanner

आत्म ख्यातिवाद (योगाचार विज्ञानवाद)

योगाचार विज्ञानवादियों का भ्रम संबंधी सिद्धान्त आत्मख्याति (विज्ञानख्याति) कहा जाता है। इनके अनुसार विज्ञान (प्रत्यय) ही एकमात्र सत् है। इनमें भिन्न, पृथक और स्वतंत्र बाह्य वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है। वस्तुएँ प्रत्यय मात्र है। प्रत्यय आत्मनिष्ठ है। ये आत्मनिहित प्रत्यय ही बाह्य पदार्थ का रूप लेकर बाहिर्वत प्रतीत होते है। चूँकि आत्मनिहित विज्ञान ही गलत प्रक्रिया के कारण बाहिर्वत प्रतीत होते है, इसलिए इनके भ्रम संबंधी सिद्धान्त को आत्मख्यातिवाद कहा जाता है।

आलोचना

आत्मख्यातिवाद को मानने पर यथार्थ ज्ञान एवं अयथार्थ ज्ञान के बीच भेद समाप्त हो जाता है।

आत्मख्यातिवाद को मानने पर ज्ञान की सम्यक् रूपेण विवेचना नहीं हो पाती। यहाँ ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय मे भेद नहीं किया गया है, परिणामस्वरूप ज्ञान प्रक्रिया की आवश्यक शर्तें पूरी नहीं हो पाती।

Scanned with CamScanner